चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	21.5.2021	2	5.8

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांगः वीसी

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

भास्कर न्यूज | हिसार

बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर आमदनी बढ़ा सकते हैं। मधुमक्खी पालन किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान

विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती है। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरूक्षेत्र, अम्बाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहाबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक शहद तथा अन्य माध्वी पदार्थ विशेषतः प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक(प्रशिक्षण) ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एच.डी. कौशिक ने मधुमक्खी पालन के समक्ष चुनौतियां और अवसर विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक जागरण....

दिनांक 21.5.21 पृष्ठ संख्या....3....कॉलम....4-8....

प्रदेश के उत्तर-पूर्वी जिलों में सर्वाधिक मधुमक्खी पालक

जागरण संवाददाता, हिसार : लॉकडाउन के कारण कई लोग ऐसे हैं जो बेरोजगार हो गए हैं या बेरोजगार युवा जो कुछ काम करना चाहते हैं। ऐसे युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर रोजगार कमा सकते हैं। आपको बता दें कि हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम राज्य है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरूक्षेत्र, अंबाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 फीसद मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है। दरअसल चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस पर वेबिनार आयोजित किया गया।

विश्व मधुमक्खी दिवस पर एचएयू में आयोजित वेबिनार में संबोधित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बी.आर कांबोज व मौजूद अन्य। ● पीआरओ।

हरियाणा में मधुमक्खियों को नौ माह तक मिलता है भोजन

हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है। कुलपति बताते हैं कि राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं। जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग नौ माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं।

महामारी के समय इम्युनिटी बूस्टर का काम करेगा शहद

वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक शहद तथा अन्य माच्वी पदार्थ प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं।

परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी हैं सहायक

प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। तिलहनी फसलों मुख्यत: राया व सरसों में अच्छी परागण क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। कई अन्य फसलें जैसे अरहर, बेल वाली सब्जियां, प्याज, गोभी, गाजर, मूली की बीज वाली, अमरूद, नीबू, नाशपती आदि में मधुमक्खियों द्वारा पर परागण से पैदावार बढ़ती है। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते है, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 21.5.2021 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....7.8.....

'मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वैबिनार आयोजित'

हिसार, 20 मई (पकेस): बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे।

वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वैबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

मुख्यातिथि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	21.5.2021	2	1-3

मधुमक्खी दिवस पर एचएयू में वेबिनार

हिसार(ब्यूरो)। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। खेती के साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर आमदनी बढ़ा सकते हैं। मधुमक्खी पालन को थोड़े पैसे से शुरू कर बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षण विभाग के सह निदेशक डॉ. अशोक गोदारा ने स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी।

कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एचडी कौशिक, विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार,सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी ,सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने भी विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा की आवाज	21.05.2021	--	--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग: कुलपति

हिसार। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते है। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज ने सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन = ' अवसर और चुनौतियां' विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार को संबोधित करते हुए कही। मुख्य अतिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लंबे भू-भाग है जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती है जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती है। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रांत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिंदुस्तान समाचार एजेंसी	21.05.2021	--	--

dailyhunt

हिन्दुस्थान समाचार

हिसार: मधुमक्खी पालन को सहायक व्यवसाय के रूप में अपनाना समय की मांग: प्रो. बीआर काम्बोज

हिसार, 20 मई (हि.स.)। बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं।

यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कही। वे गुरुवार को सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार को संबोधित कर रहे थे।

मुख्य अतिथि ने कहा कि हरियाणा शहद उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, बेर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम स्थान है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, अम्बाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं।

कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी और प्रतिभागियों से इस वेबिनार का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर [illegible] ने मधुमक्खी पालन के समक्ष चुनौतियां और अवसर विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार ने मधुमक्खी पालन की महत्ता पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी ने मधुमक्खी पालन की विविधताओं विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. सुरेन्द्र सिंह ने सभी प्रतिभागियों का आभार जताया।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भारत सारथी	21.05.2021	--	--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

May 20, 2021 कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

हिसार : 20 मई – बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	21.05.2021	--	--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : कुलपति

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	20.05.2021	--	--

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, बेर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रांत है। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्युनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है।

हिसार। वेबिनार में संबोधित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व मौजूद अन्य।

मुख्यातिथि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। तिलहनी फसलों मुख्यतः राया व सरसों में अच्छी परागण क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। कई अन्य फसलों जैसे अरहर, बेल वाली सब्जियां, प्याज, गोभी, गाजर, मूली की बीज वाली, अमरूद, निम्बू, नाशपाती आदि में मधुमक्खियों द्वारा पर परागण से पैदावार बढ़ती है। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते है, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार ने मधुमक्खी पालन की महत्ता पर जानकारी दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी ने मधुमक्खी पालन की विभिन्नताएं विषय पर प्रकाश डाला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टुडे	21.05.2021	--	--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

टुडे न्यूज | हिसार

बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी।आर। काम्बोज ने कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा

वेबिनार में संबोधित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व मौजूद अन्य।

फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरूक्षेत्र, अम्बाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	20.05.2021	--	--

मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर करें आमदनी में इजाफा : कुलपति

हिसार/20 मई/रिपोर्टर

बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन- अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाईन वैबीनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, ग्वार, फल व सब्जियां आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहाबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक शहद तथा अन्य माध्यी पदार्थ विशेषत: प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं। मुख्यातिथि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। तिलहनी फसलों मुख्यत: राया व सरसों में अच्छी परागण क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रॉयल जैली इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। दुनियाभर में मधुमक्खी पालन ग्रामीण समुदायों के लिए कम लागत वाला व्यवसाय है तथा ग्रामीण विकास के साथ-साथ बागवानी, कृषि, पर्यावरण संरक्षण जैसे सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर डॉ. अशोक गोदारा, सह निदेशक (प्रशिक्षण) ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी दी। कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एचडी कौशिक ने मधुमक्खी पालन के समक्ष चुनौतियां और अवसर विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार ने मधुमक्खी पालन की महत्ता पर जानकारी दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी ने मधुमक्खी पालन की विविधताएं विषय पर प्रकाश डाला। कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	20.05.2021	--	--

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : प्रो. बी.आर. काम्बोज

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 20 मई : बेरोजगार युवा मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपना खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा किसान खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन को सहयोगी व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर सकते हैं। मधुमक्खी पालन को किसान थोड़े से पैसे से शुरू कर अपने व्यवसाय को बड़े स्तर तक बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान व कीट विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, बेर, फल व सब्जियां आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, अम्बाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहाबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक शहद तथा अन्य मधवी पदार्थ विशेषतः प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं।

परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार बढ़ाने में भी है सहायक

मुख्यातिथि ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं।

मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। तिलहनी फसलों मुख्यतः राया व सरसों में अच्छी परागण क्रिया से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। कई अन्य फसलों जैसे अमरूद, बेल वाली सब्जियां, प्याज, गोभी, गाजर, मूली की बीज वाली, आमरूद, नींबू, नाशपाती आदि में मधुमक्खियों द्वारा पर परागण से पैदावार बढ़ती है। मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस, पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते हैं, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। दुनियाभर में मधुमक्खी पालन ग्रामीण समुदायों के लिए कम लागत वाला व्यवसाय है तथा ग्रामीण विकास के साथ-साथ वानिकी, बागवानी, कृषि, पर्यावरण संरक्षण जैसे सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर डॉ. अशोक गोदारा, सह-निदेशक (प्रशिक्षण) ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा की विस्तृत जानकारी दी और प्रतिभागियों से इस वेबिनार का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एच.डी. कौशिक ने मधुमक्खी पालन के समक्ष चुनौतियां और अवसर विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार ने मधुमक्खी पालन की महत्ता पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। सहायक वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी ने मधुमक्खी पालन की विविधताएं विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। कीट विज्ञान विभाग के सहायक निदेशक डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने सभी प्रतिभागियों का वेबिनार के समापन अवसर पर धन्यवाद किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	20.05.2021	--	--

एचएयू में विश्व मधुमक्खी दिवस के उपलक्ष्य में मधुमक्खी पालन : अवसर और चुनौतियां विषय पर वेबिनार आयोजित

सहायक व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन समय की मांग : प्रो. काम्बोज